सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समस्य
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ—अक्षरों व वर्णों को लिखने सिखाने के लिए निम्न विधियाँ काम में लायी जाती हैं—

(1) **रूपरेखा अनुकरण विधि**—बालकों को कुछ मुद्रित ऐसी पुस्तिकाएँ देते हैं जिसमें अक्षर या वाक्य बिन्दु रूप में लिखे होते हैं, बालक केवल उन पर पेन्सिल या पेन घुमाकर अभ्यास करता है तो अभ्यास करते रहने से वह अक्षर या शब्दों को लिखना सीख जाता है।

(2) **स्वतन्त्र अनुकरण विधि**—अध्यापक श्यामपट्ट पर या बालक की स्लेट पर अभ्यास अक्षर लिख देता है और बालक से उसे देख-देखकर उसी अनुरूप अक्षर लिखने को कहता है। बालक ऊपर लिखे अक्षर को देखकर लिखने का अभ्यास करता है।

Scanned with CamScanner

(3) मॉण्टेसरी विधि—इस विधि में लकड़ी, प्लास्टिक, गत्ते आदि के बने वर्णों पर बालक अपनी अँगुली घुमाता है या वर्णों के बाहर की ओर चॉक या पेन्सिल घुमाता है तो इससे उसे लिखने का अभ्यास होता है। इससे बालक अक्षरों के स्वरूप से परिचित होता है तथा इस विधि में बालक रुचि भी लेते हैं।

(4) पेरटालॉजी विधि—इस विधि में बालकों को पहले अक्षर लिखना सिखाया जाता है। सबसे पहले वर्णों के छोटे-छोटे खण्ड कर लिये जाते हैं फिर इन टुकड़ों का योग करके अभ्यास कराया जाता है।

जैसे क के लिए—00—व व—कक

(5) जेट कॉक विधि—इस विधि में बालक स्वयं संशोधित से लिखना सीखता है अर्थात् पहले पढ़ो फिर उसे लिखो फिर लिखे हुए को मूल से मिलाओ, देखो तथा अपनी गलती में संशोधन कर दूर करो। इसमें बालक के समक्ष पूरा वाक्य रखा जाता है तथा बालक अनुकरण के आधार पर एक-एक शब्द लिखता है और मूल वाक्य से मिलाकर अशुद्धि का पता लगाकर उसे दूर करता है।

(6) वर्ण परिचय—यह परम्परागत पद्धति है, इसमें बालक को वर्णमाला के शब्दों को सुविधानुसार सिखाया जाता है तथा अक्षर सीख जाने के बाद बालक को मात्रा का ज्ञान दिया जाता है। मात्राओं और वर्णों के योग से सरल शब्दों को लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

जैसे— द ल द ल = दलदल, ब ल = बल, दि ल = दिल, बि ल = बिल।

(7) शब्द द्वारा अक्षर परिचय—सामान्य अक्षर सीखने में बालक की रुचि नहीं होती, उसे ये सब निरर्थक अक्षर जान पड़ते हैं। अतः कुछ शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि शब्द द्वारा बालक को अक्षर ज्ञान कराया जाय, शब्दों को वस्तु के साथ या चित्र के साथ प्रस्तुत करना ठीक रहेगा। जैसे—

क—कबूतर का चित्र
ख—खरगोश का चित्र
घ—घड़ी का चित्र
म—मछली का चित्र
न—नल का चित्र
ट—टमाटर का चित्र

इसमें चित्रों के साथ ही अक्षरों को पढ़ने का अभ्यास कराया जाता है। अभीष्ट अक्षरों को चिन्हित कर उस ओर बालक का ध्यान आकर्षित कराया जाता है। बालक चित्रों को पहचानकर उसकी बनावट से परिचित वर्ग को सरलता से सीख लेता है।

(8) वाक्य द्वारा अक्षर परिचय—बालकों की रुचि की दृष्टि से शब्दों की अपेक्षा वाक्य अधिक सार्थक और उपयोगी सिद्ध होते हैं। पढ़ने में यह विधि उपयोगी है, लेकिन लिखने में कठिन होती है। अतः इसका उपयोग सामान्यतः नहीं होता है।

(9) चित्रों की विधि—इसमें चित्रों की सहायता से शब्द और शब्दों की सहायता से अक्षर सिखाये जाते हैं, इसमें खेल-खेल में बालकों को वर्ण रचना सिखा दी जाती है।

Scanned with CamScanner